Shri Baglamukhi Sahasranamam

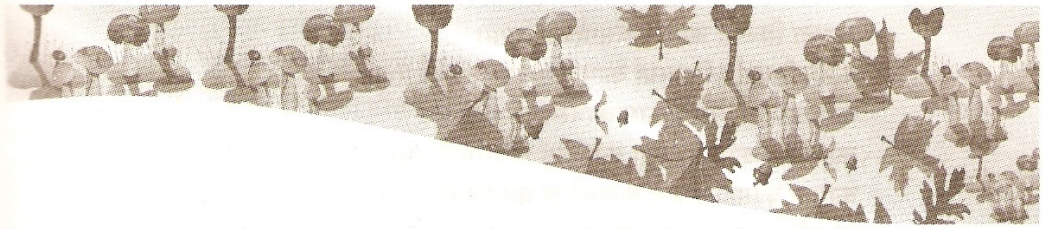

१४ श्री बगलासहस्रनाम स्तोत्रम्

माँ बगला के सहस्रनाम स्तोत्र अति प्राचीन व दुर्लभ ग्रन्थ "श्री उत्कट शम्बर नागेन्द्र प्रमाण तन्त्र" से लिये गये हैं। महामाया, माँ बगला के अनन्त रुप व भेद हैं। यह ब्रह्मास्त्र विद्या चतुर्वर्गफल प्रदान करने वाली, अति गुह्यतर, सर्वतन्त्रों में गुप्त, अति गुप्त और विशेषतः कलि काल में महासिद्धि प्रदान करने वाली है। साधकों को भी कदम-कदम पर सचेत किया गया है कि इस विद्या को प्रयत्नपूर्वक स्वयोनि के समान गुप्त रखना चाहिए और किसी को भी बताना नहीं चाहिए।

◆ **विनियोग** ◆

"ॐ अस्य श्री पीताम्बरी सहस्रनाम स्तोत्र मन्त्रस्य भगवान सदाशिव ऋषिः, अनुष्टुप छन्दः, श्री जगद्वश्यकरी पीताम्बरी देवता, सर्वाभीष्ट सिद्धयर्थे जपे विनियोगः।"

◆ **ध्यान** ◆

पीताम्बर परीधानां पीनोन्नत पयोधराम,
जटामुकुट शोभाढयां पीतभूमिसुखासनाम्।
शत्रोर्जिह्वां मुदगरं च विभ्रतीं परमां कलाम्॥

◆ **स्तोत्र** ◆

ब्रह्मास्त्रं ब्रह्मविद्या च ब्रह्ममाता सनातनी।
ब्रह्मेशी ब्रह्मकैवल्यं बगला ब्रह्मचारिणी ॥१॥
नित्यानन्दा नित्यसिद्धा नित्यरूपा निरामया।
सन्धारिणी महामाया कटाक्ष-क्षेम-कारिणी ॥२॥
कमला विमला नीला रत्नकान्ति गुणाश्रिता।
कामप्रिया कामरता कामाकामस्वरूपिणी ॥३॥

मङ्गला विजया जाया सर्वमगंलकारिणी।
कामिनी कामिनीक्राम्या कामुका कामचारिणी ॥४॥
कामप्रिया कामरता कामाकामस्वरूपिणी।
कामाख्या कामबीजस्था कामपीठ निवासिनी ॥५॥
कामदा कामहा काली कपाली च करालिका।
कंसारि: कमला कामा कैलासेश्वरवल्लभा ॥६॥
कात्यायनी केशवा च करूणा कामकेलिभुक्।
क्रिया कीर्ति कृत्तिका च काशिका मधुरा शिवा ॥७॥
कालाक्षी कालिका काली धवलाननसुन्दरी।
खेचरी च ख़मूर्तिश्च क्षुद्रा क्षद्रा-ऽक्षुद्रा-क्षुधावरा ॥८॥
खड्गहस्ता खड्गरता खड्गिनी खर्परप्रिया।
गङ्गा गौरी गामिनी च गीता गौत्र विवर्धिनी ॥९॥
गोधरा गोकरा गोधा गन्धर्वपुरवासिनी।
गन्धर्वा गन्धर्वकला गोपनी गरुड़ासना ॥१०॥
गोविन्दभावा गोविन्दा गान्धारी गन्धमादिनी।
गौराङ्गी गोपिकामूर्तिर्गोपी गोष्ठ निवासिनी ॥११॥
गन्धा गजेन्द्र-गामिन्या गदाधराप्रिया ग्रहा।
घोरघोरा घोररूपा घनश्रोणी घनप्रभा ॥१२॥
दैत्येन्द्रप्रबला घण्टावादिनी घोरनिश्वना।
डाकिन्युमा उपेन्द्रा च उर्वशी उरगासना ॥१३॥
उत्तमा उन्नता उन्ना उत्तमस्थानवासिनी।
चामुण्डा मुण्डिका चण्डी चण्डदर्प हरेति च ॥१४॥
उग्रचण्डा चण्डचण्डा चण्डदैत्यविनासिनी।
चण्डरूपा प्रचण्डा च चण्डाचण्ड शरीरिणी ॥१५॥
चतुर्भुजा प्रचण्डा च चराऽचरनिवासिनी।
क्षत्रप्राय: शिरोवाहा छलाछलतरा छली॥१६॥
क्षत्ररूपा क्षत्रधरा क्षत्रिय-क्षयकारिणी।
जया च जयदुर्गा च जयन्ती जयदापरा ॥१७॥
जायिनी जयिनी ज्योत्सना जटाधरप्रिया जिता।
जितेन्द्रिया जितक्रोधा जयमाना जनेश्वरी ॥१८॥
जितमृत्युर्जरातीता जाह्नवी जनकात्मजा।
झङ्कारा झन्झरी झण्टा झङ्कारी झकशोभिनी ॥१९॥
झखा झमेशा झङ्कारी योनिकल्याणदायिनी।
झर्झरा झमुरी झारा झराझरतरापरा ॥२०॥

झन्झा झमेता झङ्कारी झणा कल्याणदायिनी।
ईमना मानसी चिन्त्या ईमुना शङ्करप्रिया ॥२१॥
टकारी टिटिका टीका टङ्किनी च टवर्गगा।
टापा टोपा टटपतिष्टमनी टमनप्रिया ॥२२॥
ठकारधारिणी ठीका ठङ्करी ठिकरप्रिया।
ठेकठासा ठकरती ठामिनी ठमनप्रिया ॥२३॥
डारहा डाकिनी डारा डामरा डमरप्रिया ।
डखिनीऽऽयुक्ता च डमरुकरवल्लभा ॥२४॥
ढक्का ढक्की ढक्कनादा ढोलशब्द-प्रबोधिनी।
ढामिनी ढामनप्रीता ढगतन्त्र-प्रकाशिनी ॥२५॥
अनेक रूपिणी अम्बा अणिमासिद्धि-दायिनी।
अमन्त्रिणी अणुकरी अणुमदभानुसंस्थिता ॥२६॥
तारा तन्त्रावती तन्त्र-तत्वरूपा तपस्विनि।
तरंङ्गिणी तत्वपरा तन्त्रिका तन्त्रविग्रहा ॥२७॥
तपोरूपा तत्वदात्री तपःप्रीति-प्रघर्षिणी।
तन्त्रा यन्त्रार्चनपरा तलातलनिवासिनी ॥२८॥
तल्पदा त्वल्पदा कामास्थिरा स्थिरतरास्थितिः।
स्थाणु-प्रिया स्थपरा स्थिता स्थान प्रदायिनी ॥२९॥
दिगम्बरा दयारुपा दावाग्नि दमनीदमा।
दुर्गा दुर्गापरा देवी दुष्ट-दैत्य-विनाशिनी ॥३०॥
दमन प्रमदा दैत्य-दया-दान-परायणा।
दुर्गतिनाशिनी दान्ता दम्भिनी दम्भवर्जिता ॥३१॥
दिगम्बरप्रिया दम्भा दैत्य-दम्भ-विदारिणी।
दमनादमन-सौन्दर्या दानवेन्द्र विनाशिनी ॥३२॥
दया धरा च दमनी दर्भपत्र-विलासिनी।
धरिणी धारिणी धात्री धराधर-धरप्रिया ॥३३॥
धराधर-सुता देवी सुधर्मा धर्मचारिणी।
धर्मज्ञा धवला धूला धनदा धनवर्द्धिनी ॥३४॥
धीरा-धीरा धीरतरा धीरसिद्धि-प्रदायिनी।
धन्वन्तरिधराधीरा ध्येया ध्यानस्वरूपिणी ॥३५॥
नारायणी नारसिंही नित्यानन्द नरोत्तमा।
नक्ता नक्तवती नित्या नील-जीभूत-सन्निभा ॥३६॥
नीलाङ्गी नीलवस्त्रा च नीलपर्वत-वासिनी।
सुनील-पुष्प-खचिता नील-जम्बुसम-प्रभा ॥३७॥

नित्याख्या षोडशी विद्या नित्याऽनित्य सुखावहा।
नर्मदा नन्दना-नन्दा नन्दाऽऽनन्द विवर्धिनी ॥३८॥
यशोदानन्द तनया नन्दनोद्यानवासिनी।
नागान्तका नागवृद्धा नागपत्नि च नागिनी ॥३९॥
नमिताशेषजनता नमस्कारवती नमः।
पीताम्बरा पार्वति च पीताम्बर-विभूषिता ॥४०॥
पीतमाल्याम्बरधारा पीताभा पिङ्गमूर्धजा।
पीतपुष्पार्चनरता पीतपुष्पसमर्चिता ॥४१॥
परप्रभा पितृपतिः परशैन्यविनाशिनी।
परमा परतन्त्रा च परमन्त्रा परात्परा ॥४२।
पराविद्या परासिद्धिः परास्थान-प्रदायिनी।
पुष्पा पुष्पवती नित्या पुष्पमाला-विभूषिता ॥४३॥
पुरातना पूर्वपरा परसिद्धि-प्रदायिनी।
पीतानितम्बिनी पीता पीनोन्नत-पयस्तनी ॥४४॥
प्रेमा प्रमध्यमा शेषा पद्मपत्र-विलासिनी।
पद्मावती पद्मनेत्रा पद्मा पद्ममुखी परा ॥४५॥
पद्मासना पद्मप्रिया पद्मराग-स्वरूपिणी।
पावनी पालिकापात्री परदा वरदा शिवा ॥४६॥
प्रेतसंस्था परानन्दा परब्रह्मस्वरूपिणी।
जिनेश्वर-प्रिया देवी पशुरक्त-रतप्रिया ॥४७॥
पशुमाँस प्रिया पर्णा परामृतपरायणा।
पाशिनी पाशिका चापि पशुघ्नी पशुभाषिणी ॥४८॥
फुल्लारविन्दवदनी फुल्लोत्पलशरीरिणी ।
परानन्दप्रदा वीणा पशु-पाश-विनाशिनी ॥४९॥
फुत्कारा फुत्परा फेणी फुल्लेन्दीवरलोचना।
फट्मन्त्रा स्फटिका स्वाहा स्फोटा च फट्स्वरूपिणी ॥५०॥
स्फाटिका घुटिका घोरा स्फटिकाद्रिस्वरूपिणी।
वराङ्गना वरधरा वाराही वासुकी वरा ॥५१॥
बिन्दुस्था बिन्दुनी वाणी बिन्दुचक्रनिवासिनी।
विद्याधरी विशालाक्षी काशीवासिजन प्रिया ॥५२॥
वेदविद्या विरुपाक्षी विश्वयुग बहुरूपिणी।
ब्रह्मशक्ति-र्विष्णुशक्तिः पन्चवक्त्रा शिवप्रिया ॥५३॥
वैकुण्ठवासिनी देवी वैकुण्ठपददायिनी।
ब्रह्मरूपा विष्णुरूपा परब्रह्ममहेश्वरी ॥५४॥

भवप्रिया भवोद्भावा भवरूपा भवोत्तमा।
भवपारा भवधारा भाग्यवत्प्रियकारिणी ॥५५॥
भद्रा सुभद्रा भवदा शुम्भदैत्य-विनाशिनी।
भवानी भैरवी भीमा भद्रकाली सुभद्रिका ॥५६॥
भगिनी भगरूपा च भगमाना भगोत्तमा।
भगप्रिया भगवती भगवासा भगकरा ॥५७॥
भगसृष्टा भाग्यवती भगरूपा भगासिनी।
भगलिङ्गप्रिया देवी भगलिङ्गपरायणा ॥५८॥
भगलिङ्गस्वरूपा च भगलिङ्गविनोदिनी।
भगलिङ्गरता देवी भगलिङ्गनिवासिनी ॥५९॥
भगमाला भगकला भगाधरा भगाम्बरा।
भववेगा भगाभूषा भगेन्द्रा भाग्यरूपिणी ॥६०॥
भगलिङ्गाऽङ्गसम्भोगा भगलिङ्गसवावहा।
भगलिङ्गसमाधुर्या भगलिङ्गनिवेशिता ॥६१॥
भगलिङ्गसुपूजा च भगलिङ्गसमन्विता।
भगलिङ्गविरक्ता च भगलिङ्गसमावृता ॥६२॥
माधवी माधवीमान्या मधुरा मधुमानिनी।
मन्दहासा महामाया मोहिनी महदुत्तमा ॥६३॥
महामोहा महाविद्या महाघोरा महास्मृतिः।
मनास्विनी मानवती मोदिनी मधुराननना ॥६४॥
मेनिका मानिनी मान्या मणिरत्न विभूषणा।
मल्लिका मौलिका माला मालाधरमदोत्तमा ॥६५॥
मदना सुन्दरी मेधा मधुमत्ता मधुप्रिया।
मत्तहंसा समोन्नासा मत्तसिह महासनी ॥६६॥
महेन्द्रवल्लभा भीमा मौल्यं च मिथुनात्मजा ।
महाकाल्या महाकाली महाबुद्धिर्महोत्कटा ॥६७॥
माहेश्वरी महामाया महिषासुरघातिनी।
मधुराकीर्तिमत्ता च मत्त-मातङ्ग-गामिनी ॥६८॥
मदप्रिया मासंरता मत्तयुक्-कामकारिणी।
मैथुन्यवल्लभा देवी महानन्दा महोत्सवा ॥६९॥
मरिचिर्मारतिर्माया मनोबुद्धिप्रदायिनी
मोहा मोक्षा महालक्ष्मी-र्महत्तपदप्रदायिनी ॥७०॥
यमरूपा च यमुना जयन्ती च जयप्रदा।
याम्या यमवती युद्धा यदोः कुलविवर्धिनी ॥७१॥

रमा रामा रामपत्नी रत्नमाला रतिप्रिया।
रत्नसिंहासनस्था च रत्नाभरणमण्डिता ॥७२॥
रमणी रमणीया च रत्या रसपरायणा।
रतानन्दा रतवती रघूणां कुलवर्द्धिनी ॥७३॥
रमणारि-परिभ्राज्या रैधा-राधिकरत्नजा।
रावी रसस्वरूपा च रात्रीराजसुखावहा ॥७४॥
ऋतुजा ऋतुदा ऋद्धा ऋतुरूपा ऋतुप्रिया।
रक्तप्रिया रक्तवती रङ्किणी रक्तदन्तिका ॥७५॥
लक्ष्मीर्लज्जा लतिका च लीलालग्ना-नितांक्षिणी।
लीला लीलावती लोमा हर्षाह्लादनपट्टिका ॥७६॥
ब्रह्मस्थिता ब्रह्मरूपा ब्रह्मणा वेदवन्दिता।
ब्रह्मोद्भवा ब्रह्मकला ब्रह्माणी ब्रह्मबोधिनी ॥७७॥
वेदाङ्गना वेदरुपा वनिता विनता वसा।
बाला च युवती वृद्धा ब्रह्मकर्मपरायणा ॥७८॥
विन्ध्यस्था विन्ध्यवासी च बिन्दुयुक् बिन्दुभूषिमा ।
विद्यावती वेदधारी व्यापिका बर्हिणीकला ॥७९॥
वामाचारप्रिया वह्निर्वामाचार-परायणा।
वामाचाररता देवी वामदेवप्रियोत्तमा ॥८०॥
बुद्धेन्द्रिया विबुद्धा च बुद्धाचरणमालिनी।
बन्धमोचन-कर्त्री च वारुणा वरुणालया॥८१॥
शिवा शिवप्रिया शुद्धा शुद्धाङ्गी शुक्लवर्णिका।
शुक्लपुष्प-प्रिया शुक्ला शिवधर्मपरायणा ॥८२॥
शुक्लस्था शुक्लिनी शुक्लरुपा शुक्लपशुप्रिया।
शुक्रस्था शुक्रिणी शुक्रा शुक्ररुपा च शुक्रिका ॥८३॥
षण्मुखी च षडङ्गा च षटचक्रनिवासिनी।
षडग्रन्थियुक्ता षोढा च षण्माता च षणात्मिका ॥८४॥
षडगःयुवती देवी षडङ्गप्रकृतिर्वशी।
षडानना षडरसा च षष्ठी षष्ठेश्वरीप्रिया ॥८५॥
षडङ्गवादा षोडशी च षोढान्यास-स्वरुपिणी।
षटचक्रभेदनकरी षट्चक्रस्थ-स्वरूपिणी ॥८६॥
षोडशस्वररूपा च षण्मुखी षड्दान्विता।
सनकादि-स्वरुपा च शिवधर्मपरायणा ॥८७॥
सिद्धा सप्तस्वरी शुद्धा सुरमाता स्वरोत्तमा।
सिद्धविद्या सिद्धमाता सिद्धाऽसिद्ध-स्वरूपिणी ॥८८॥

हरा हरिप्रिया हारा हरिणी हारयुक् तथा।
हरिरुपा हरिधारा हरिणाक्षी हरिप्रिया ॥८९॥
हेतुप्रिया हेतुरता हिताऽहित स्वरूपिणी।
क्षमा क्षमावती क्षीता क्षुद्रघण्टा विभूषणा ॥९०॥
क्षयङ्करी क्षितिशा च क्षीणमध्य-सुशोभना।
अजानन्ता अपर्णा च अहल्या शेषशायिनी ॥९१॥
स्वान्तर्गता च साधूनामन्तराऽनन्तरूपिणी।
अरूपा अमला चार्द्धा अनन्तगुणशालिनी ॥९२॥
स्वविद्या विद्यकाविद्या विद्या चार्विन्दलोचना।
अपराजिता जातवेदा अजपा अमरावती ॥९३॥
अल्पा स्वल्पा अनल्पाद्या अणिमासिद्धिदायिनी।
अष्टसिद्धिप्रदा देवी रूप-लक्षण-सयुंता ॥९४॥
अरविन्दमुखा देवी भोग-सौख्य-प्रदायिनी।
आदिविद्या आदिभूता आदिसिद्धि प्रदायिनी ॥९५॥
सीत्काररूपिणी देवी सर्वासन-विभूषिता।
इन्द्रप्रिया च इन्द्राणी इन्द्रप्रस्थ निवासिनी ॥९६॥
इन्द्राक्षी इन्द्रवज्रा च इन्द्रमद्योक्षणी तथा।
ईलाकामनिवासा च ईश्वरीश्वरवल्लभा ॥९७॥
जननी चेश्वरी दीना भेदा चेश्वरकर्म कृत।
उमा कात्यायिनी उद्ध्वा मीना चोत्तरवासिनी ॥९८॥
उमापति प्रिया देवी शिवा चोङ्काररूपिणी।
उरगेन-शिरोरत्ना उरगोरगवल्लभा ॥९९॥
उद्यानवासिनी माला प्रशस्तमणिभूषणा।
उर्ध्वदन्तोत्तमाङ्गी च उत्तमा चोर्ध्वकेशिनी ॥१००॥
उमासिद्धिप्रदा-सीमन्ता कामिका च गुणात्मका।
एला एकारविद्या च एणीविद्याधरा तथा ॥१०१॥
ओङ्कारवलयोपेता ओङ्कारपरमाकला।
ॐ वदवद वाणी च ॐ ङ्कारक्षर मण्डिता ॥१०२॥
ऐन्द्रिकुलिशहस्ता च ॐ लोकपरवासिनी।
ॐ कारमध्यबीजा च ॐ नमोरूपधारिणी। ॥१०३॥
परब्रह्मस्वरुपा च अंशुकाशुकवल्लभा।
ॐ कारा अः फडमन्त्रा च अक्षाक्षर विभूषिता ॥१०४॥
अमन्त्रा मंत्ररूपा च पदशोभासमन्विता।
प्रणवोङ्काररूपा च प्रणवोच्चारभाक् पुनः ॥१०५॥

ह्रींकाररूपा ह्रींकारी वागबीजाक्षरभूषणा।
हृल्लेखा सिद्धियोगा च हृत्पद्मासन संस्थिता ॥१०६॥
बीजाख्या नेत्रहृदया ह्रीं बीजा भुवनेश्वरी।
क्लींकामराजा क्लिन्ना च चतुवर्गफलप्रदा ॥१०७॥
क्लीं-क्लीं-क्लीं रूपिका देवी क्रीं-क्रीं-क्रीं नामधारिणी।
कमलाशक्ति बीजा च पाशाङ्कुशविभूषिता ॥१०८॥
श्रीं श्रींकारा महाविद्या श्रद्धा श्रद्धावती तथा।
ॐ ऐं क्लीं ह्रीं श्रीं परा च क्लींकारी परमाकला ॥१०९॥
ह्रीं क्लीं श्रींकारस्वरूपा सर्वकर्मफलप्रदा।
सर्वाढया सर्वदेवी च सर्वसिद्धिप्रदा तथा ॥११०॥
सर्वज्ञा सर्वशक्तिश्च वाग्विभूतिप्रदायिनी।
सर्वमोक्षप्रदा देवी सर्वभोगप्रदायिनी ॥१११॥
गुणेन्द्रवल्लभा वामा सर्वशक्तिप्रदायिनी।
सर्वानन्दमयी चैव सर्वसिद्धिप्रदायिनी ।११२॥
सर्वचक्रेश्वरी देवी सर्वसिद्धेश्वरी तथा।
सर्वप्रियङ्करी चैव सर्वसौख्यप्रदायिनी ॥११३॥
सर्वानन्दप्रदा देवी ब्रह्मानन्दप्रदायिनी।
मनोवाञ्छितदात्री च मनोवृद्धिसमन्विता ॥११४॥
अकारादि-क्षकारान्ता दुर्गा दुर्गतिनाशिनी।
पद्मनेत्र सुनेत्रा च स्वधा स्वाहा वषट्करी ॥११५॥
स्ववर्गा देववर्गा च तवर्गा च समन्विता।
अन्तस्था वेश्मरूपा च नवदुर्गा नरोत्तमा ॥११६॥
तत्वसिद्धिप्रदा नीला तथा नीलपताकिनी।
नित्यरूपा निशाकारी स्तम्भनी मोहिनीति च ॥११७॥
वशङ्करी तथोच्चाटी उन्मादी कर्षिणीति च।
मातङ्गी मधुमत्ता च अणिमा लघिमा तथा ॥११८॥
सिद्धा मोक्षप्रदा नित्या नित्यानन्द प्रदायिनी।
रक्ताङ्गी रक्तनेत्रा च रक्तचन्दन भूषिता ॥११९॥
स्वल्पसिद्धि सुकल्पा च दिव्यचारणशुक्रभा।
सऽक्रान्तिः सर्वविद्या च सस्यवासरभूषिता ॥१२०॥
प्रथमा च द्वितीया च तृतीया च चतुर्थिका।
पञ्चमी चैव षष्ठी च विशुद्धा सप्तमी तथा ॥१२१॥
अष्टमी नवमी चैव दशम्येकादशी तथा।
द्वादशी त्रयोदशी च चतुर्दश्यथ पूर्णिमा ॥१२२॥

अमावस्या तथा पूर्वा उत्तरा परिपूर्णिमा।
षड्गिनी चक्रिणी घोरा गदनी शूलिनी तथा ॥१२३॥
भुशुण्डि चापिनी बाण-सर्वायुध-विभूषणा।
कुलेश्वरी कुलवन्ती कुलाचार-परायणा ॥१२४॥
कुलकर्मसु रक्ता च कुलाचार-प्रवर्द्धिनी।
कीर्तिः श्रीश्चरमा रामा धर्मायै सततं नमः ॥१२५॥
क्षमा धृति स्मृतिर्मेधा कल्पवृक्षनिवासिनी।
उग्रा उग्रप्रभा गौरी वेदविद्या विबोधिनी ॥१२६॥
साध्या सिद्धा सुसिद्धा च विप्ररूपा तथैव च।
काली कराली काल्या च कालदैत्य विनाशिनी ॥१२७॥
कौलिनी कालिकी चैव क-च-ट-त- पवर्णिका।
जयिनी जययुक्ता च जयदा जृम्भिणी तथा ॥१२८॥
स्राविणी द्राविणी देवी भरुण्डा विन्ध्यवासिनी।
ज्योतिर्भूता च जयदा ज्वाला-माला-समाकुला॥१२९॥
भिन्ना भिन्नप्रकाशा च विभिन्नां भिन्नरूपिणी।
अश्विनी भरणी चैव नक्षत्रसम्भवानिला ॥१३०॥
काश्यपी विनताख्याता दितिजादितिरेव च।
कीर्तिः कामप्रिया देवी कीर्त्याकीर्ति विवर्धिनी ॥१३१॥
सद्योमांससमा लब्धा सद्यश्छिन्नासि शङ्करा।
दक्षिणा चोत्तरा पूर्वा पश्चिमादिक् तथैव च ॥१३२॥
अग्नि-नैऋति-वायव्या ईशान्यादिक् तथा स्मृता।
ऊर्ध्वाङ्गाधोगता श्वेता कृष्णा रक्ता च पीतका ॥१३३॥
चतुर्वर्गा चतुवर्णा चतुर्मात्रात्मिकाक्षरा।
चतुर्मुखी चतुर्वेदा चतुर्विद्या चतुर्मुखा ॥१३४॥
चतुर्गुणा चतुर्माता चतुवर्गफलप्रदा।
धात्री विधात्री मिथुना नारी-नायक-वासिनी ॥१३५॥
सुरा मुदा मुद्वती मोदिनी मेनकात्मजा।
उर्ध्वकाली सिद्धिकाली दक्षिणा कालिका शिवा ॥१३६॥
नील्या सरस्वती सा त्वं बगला छिन्नमस्तका।
सर्वेश्वरी सिद्धविद्या परा परमदेवता ॥१३७॥
हिङ्गुला हिङ्गुलाङ्गी च हिङ्गुलाधरवासिनी।
हिङ्गुलोत्तमवर्णाभा हिङ्गुला भरणा च सा ॥१३८॥
जागृति च जगन्माता जगदीश्वर-वल्लभा।
जनार्दनप्रिया देवी जययुक्ता जयप्रदा ॥१३९॥

जगदानन्दकारी च जगदाह्लादकारिणी।
ज्ञान-दानकरी यज्ञा जानकी जनकप्रिया ॥१४०॥
जयन्ती जयदा नित्या ज्वलदग्निसमप्रभा।
विद्याधरा च विम्बोष्ठि कैलाशाचलवासिनी ॥१४१॥
विभवा वडवाग्निश्च अग्निहोत्रफलप्रदा।
मन्त्ररूपा परादेवी तथैव गुरुरूपिणी ॥१४२॥
गया गङ्गा गोमती च प्रभासा पुष्कराऽपि च।
विन्ध्याचलरता देवी विन्ध्याचलनिवासिनी ॥१४३॥
बहू बहुसुन्दरी च कंसासुर विनाशिनी।
शूलिनी शूलहस्ता च वज्रा वज्रहराऽपि च ॥१४४॥
दुर्गा शिवा शान्तिकरी ब्रह्माणि ब्राह्मणप्रिया।
सर्वलोक प्रणेत्री च सर्वरोगहराऽपि च ॥१४५॥
मङ्गला शोभना शुद्धा निष्कला परमाकला।
विश्वेश्वरी विश्वमाता ललिता वसिताननना ॥१४६॥
सदाशिवा उमा क्षेमा चण्डिका चण्डविक्रमा।
सर्वदेवमयी देवी सर्वागमभयापहा ॥१४७॥
ब्रह्मेश-विष्णु-नमिता सर्वकल्याणकारिणी।
योगिनी योगमाता च योगीन्द्र-हृदय-स्थिता ॥१४८॥
योगिजाया योगवती योगीन्द्रानन्दयोगिनी।
इन्द्रादि-नमिता देवी ईश्वरीचेश्वरप्रिया ॥१४९॥
विशुद्धिदा भयहरा भक्त-द्वेषि-भयङ्करी।
भववेषा कामिनी च भरुण्डाभयकारिणी ॥१५०॥
बलभद्रप्रियाकारा संसारार्णवतारिणी।
पञ्चभूता सर्वभूता विभूतिर्भूतिधारिणी॥१५१॥
सिहंवाहा महामोहा मोहपाशविनाशिनी।
मन्दुरा मदिरा मुद्रा मुद्रा-मुद्गर-धारिणी ॥१५२॥
सावित्री च महादेवी पर-प्रिय-निनायिका।
यमदूती च पिङ्गाक्षी वैष्णवी शङ्करी तथा॥१५३॥
चन्द्रप्रिया चन्द्ररता चन्द्रनारण्यवासिनीं
चन्दनेन्द्र-समायुक्ता चन्द्रदैत्य-विनाशिनी॥१५४॥
सर्वेश्वरी यक्षिणी च किराती राक्षसी तथा।
महाभोगवती देवी महामोक्ष-प्रदायिनी॥१५५॥
विश्वहन्त्री विश्वरूपा विश्वसंहारकारिणी।
धात्री च सर्वलोकानां हितकारणकामिनी॥१५६॥

कमला सूक्ष्मदा देवी धात्री हरविनाशिनी।
सुरेन्द्रपूजिता सिद्धा महातेजोवतीति च ॥१५७॥
पररूपवति देवी त्रैलोक्याकर्षणकारिणी।

(इति श्री उत्कटशम्बरे नागेन्द्रप्रयाणतन्त्रे षोडशसहस्त्रे विष्णुशङ्कर संवादे श्री पीताम्बरी सहस्रनामस्तोत्रम् समाप्तम्)

卐 卐 卐

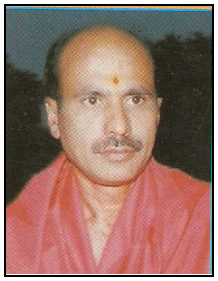

About The Author

Name :- **Shri Yogeshwaranand Ji**
Mb :- **+919917325788, +919675778193**
Email ;- **shaktisadhna@yahoo.com**

Some Of the Books Written By Shri Yogeshwarnand Ji

1. Baglamukhi Sadhna Aur Siddhi

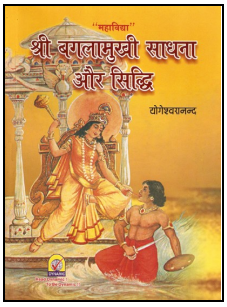

Download Click Here

2. **Mantra Sadhna**

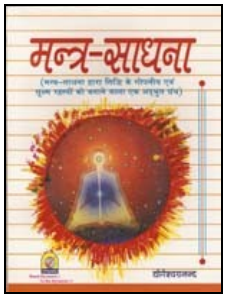

Download Click Here

3. **Shodashi Mahavidya**

Download Click Here